Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 11, November-2018, ISSN 2230-7540

हरिशंकर आदेश की सप्तशतियों में चित्रित प्रेम के विविध प्रकार

Updesh Devi*

Assistant Professor of Hindi, Guru College of Education, Mohindergarh

सार – मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह अपने विचारों को दूसरे तक पहुँचाना चाहता है और दूसरों के विचारों को जानने की जिज्ञासा रखता है। भावों-विचारों के आदान-प्रदान के क्रम ही एक-दूसरे के प्रति लगाव का भाव उत्पन्न करते हैं। यह लगाव ही परिवृद्धित होकर प्रेम की संज्ञा प्राप्त करता है। प्रेम मानव जीवन का मूलाधार है। प्रेम एक भावात्मक अनुभूति है जिसे शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त कर पाना संभव नहीं है। यह आंतरिक अनुभूति है। मानव का अस्तित्व प्रेमाश्रित है। प्रेम-भावना मानवीय हृदय तक सीमित न रहकर सृष्टि के काण-कण में व्याप्त है, जिसका अनुभव आत्मिक होता है।

----------X----------

1. परिचय

'प्रेम'शब्द की व्यापकता को स्पष्ट करते हुए डॉ. नगेन्द्र ने लिखा है -

"प्रेम के स्वरूप ही नहीं है। प्रेम की व्यापक परिधि में जड़-जगत को सामान्य से सामान्य वस्तु से लेकर प्रकृति, देश, विश्व, मानव और ईश्वर सभी का समाहार होता है।"

नगेन्द्र जी के भाव से स्पष्ट होता है कि प्रेम की कोई निश्चित परिधि नहीं है। यह सृष्टि के कण-कण में व्याप्त है। साहित्य मानव जीवन पर आश्रित होता है। अतः साहित्य में प्रेम निरुपण स्वाभाविक है।

प्रेम की परिभाषित करते हुए महाकवि प्रो॰ आदेश ने मनोव्यथा में लिखा है -

"प्रेम भूख है नहीं गात की,

प्रेम हृदय की परम पुकार।

प्रेम रूह का ही मजहब,

प्रेम जिन्दगी का हैं सार।।"

निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं कि प्रेम भावात्मक अनुभूति है जिसमें किसी प्रिय वस्तु या व्यक्ति के प्ररति आकर्षण का भाव निहित होता है। यह आकर्षण केवल मानवीय स्तर तक ही सीमित नहीं रहता। अपितु संसार के विभिन्न प्राणियों में भी विद्यमान रहता है। यह प्रेम भाव विविध रूपों में काव्य में चित्रित होता आया है।

2. सप्तशतियों में चित्रित प्रेम के विविध प्रकार

प्रेम जीवन और जगत में व्याप्त मानवीय अनुभूतियों का चित्रण है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है जिसके हृदय पक्ष में निरन्तर कोई न कोई भाव विद्यमान रहता है। प्रेम मानव की आदि एवं चिरतंन भावना है। मानव जीवन का मूलाधार प्रेम ही है। ढाई आखर प्रेम का पढै सो पंडित होय' से ही व्यापकता का ज्ञान बोध होता है। प्रेम मानव सृष्टि में भावात्मक व रागात्मक संबंधों के साथ ही ज्ञान एवं बोध का आश्रय लेकर विभिन्न रूप धारण कर लेता है।

आदेश जी की कृति शतदल की भूमिका में डॉ. नरेश मिश्र ने प्रेम के स्वरूप को चित्रित करते हुए लिखा है – "है प्रेम जगत का सार और कुछ सार नहीं" को बीज रूप में स्वीकार करते हुए कवि आदेश ने प्रेम का बहुरंगी और मार्मिक चित्रण किया है। प्रेम की रीति निराली है, यहां सहज लगाव अनिवार्य है, तो युगीन परिवेश में चिंतन भी अपेक्षित है -

"बुझाकर मना है शिखा को जलाना,

www.ignited.in

जलाकर शिखा को बुझाना मना है।

वृथा आज है यत्न आदेश सारे,

कृपण से यहां दिल लगाना मना है।।"

मानव-प्रेम, वात्सल्य-प्रेम, दांपव्य-प्रेम के नैसर्गिक रूपों के साथ प्रकृति-प्रेम, संस्कृति-प्रेम, देश-प्रेम तथा भाषा प्रेम आदि के विविध रूपों का चित्रत आदेश के काव्य की शोभा बढ़ाते हैं।

आदेश जी ने अपने सम्पूर्ण वाङ्मय में प्रेम को सर्वोपरि माना है। वह प्रेम प्रकृति से लेकर मानवीय सम्बन्धों पर आधारित रहता है। आदेश सहृदय कवि हैं इसलिए उनके समग्र साहित्य में प्रेम के विविध स्वरूपों का मनोहारी चित्रण व्याप्त है।

सप्तशतियों में चित्रित प्रेम के विविध प्रकार - महाकवि आदेश जी की सम्पूर्ण काव्य-कृतियों में प्रेम की विविधता के आधार पर विभिन्न वर्गों में विभक्त कर सकते हैं।

(क) **प्राकृतिक -** प्रकृति की नैसर्गिक छटा प्रारंभ से ही सामाजिक, कवि को आकर्षित करती है। प्राकृतिक दृश्य इतने मनोहारी हैं कि मानव चित्त सब कुछ भूलकर उनमें रम जाता है। मानव व प्रकृति का सम्बन्ध प्राचीनकाल से ही अवलोकनीय है। वैदिक काल से ही प्रकृति ने काव्य-सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। हिन्दी जगत के समग्र साहित्य में प्रकृति के अलौकिक सौन्दर्य का चित्रण मिलता है। हम कह सकते हैं कि कवियों को प्रारम्भ से ही प्रकृति अपनी ओर आकर्षित करती आयी है।

मनुष्य स्वभाव से ही सौन्दर्य-प्रेमी है, इसलिए काव्य सृजन के समय उसने प्रकृति के अलौकिक सौन्दर्य का चित्रांकन किया है। प्राकृतिक सौंदर्य से तात्पर्य उन वस्तुओं के वर्णन से जो मानव निर्मित न होकर नैसर्गिक हो; जैसे - आकाश, सागर, पृथ्वी, वन पर्वत, सरिता, मेघ, चन्द्रमा, सूर्य, नक्षत्र, रात-दिन, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे आदि।

प्राकृतिक सौन्दर्य में फूलों की अनुपम छटा का महत्वपूर्ण स्थान है। जिस प्रकार फूल खिलते हैं तो काटों की चुभन का भी एहसास होता है। ठीक उसी प्रकार मानव जीवन में भी सुख-दुःख का आवागमन निरंतर होता रहता है। यही कारण हैं कि मानव जीवन की सुख दुखात्मक प्रवृतियों के चित्रण में प्राकृतिक सौंदर्य हमेशा प्रेरणा श्रोत रहा है जिसके कारण मनुष्य अपने उद्देश्य को प्राप्त करता है। सहृदय कवि प्रकृति के सुंदर व उग्र दोनों रूपों को अपने साहित्य में स्थान देता है। इसी संदर्भ में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने प्राकृतिक दृश्य का चित्रण करते हुए लिखा है -

"प्रकृति हमारे सामने आती है - कहीं बेडौल मधु सुसज्जित या सुन्दर रूप में कहीं रूखे या कर्कश रूप में, कहीं भव्य, विशाल रूप में या विचित्र रूप में, कहीं उग्र रूप में कराल और भयंकर रूप में। सच्चे कवि का हृदय उनके इन सब रूपों में लीन होता है।"

प्रकृति और मानव का अभिन्न संबंध हैं। प्राकृतिक स्वरूपों से गुजरता हुआ मानव विकास की ओर अग्रसर होता है। मानव-समाज में सर्वाधिक संवेदनशील कवि हैं जिसे प्राकृतिक वातावरण निरंतर प्रभावित करता है। महाकवि आदेश ने अपने काव्य में प्राकृतिक दृश्यों का स्थूल से लेकर सूक्ष्म सभी रूपों का सहज चित्रण किया है। उनकी दृष्टि ने भौतिक-जैविक, चर-अचर, जड-चेतन, अमंगलकारी - मंगलकारी आदि प्राकृतिक रूपों का समावेश अपने काव्य में किया है।

महाकवि का प्रकृति के प्रति अगाध प्रेम उनकी समस्त कृतियों में चित्रित हुआ है। उनके हृदय में प्रकृति के प्रत्येक अंग के प्रति गहन अनुराग है। आदेश जी के काव्य में प्राकृतिक-प्रेम के अन्तर्गत वानस्पतिक एवं जीव जंतु के प्रति अगाध प्रेम दिखाई देता है।

(ख) **वानस्पतिक -** वनस्पति के अन्तर्गत पेड़-पौधे, फल-फूल, लता, घास आदि आते हैं। वानस्पतिक मानव जीवन का मूलाधार है प्रकृति जहाँ एक और मानव जीवन की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। वहीं दूसरी ओर मानव जी ऐन्द्रिय सुख प्रदान करती है। भारतीय वनस्पति के प्रति कवि का अतिशय प्रेम दृष्टिगोचर होता है। आदेश जी की कविता बहकते कलाकार में वनस्पति को आधार रूप में ग्रहण कर गुरु की उद्बोधक शक्ति का चित्रण करती है।

आदेश जी ने प्रकृति को मनमोहक रूप में चित्रित करते हुए धरावधू के सौंदर्य में पुष्प महत्व को परिलक्षित करते हुए लिखा है-

"सुरसरि के समीप ही सुन्दर,

सुमन-सदन था सुस्थित।

मानो सुधर धरावधू का,

www.ignited.in

चूड़ा हो पुष्प विनिर्मित।।"

'जिन्दगी' कविता में कवि ने मौत को जिन्दगी का फूल मानते हुए लिखा है -

"जिन्दगी कठिनाइयों का नाम है।

मौत कहते हैं जिसे,

वह जिन्दगी का फूल है।

जिन्दगी को भार समझे,

यह बड़ी ही भूल है।"

कवि ने 'देवालय'कृति में वृक्ष की एक शाखा को मानवीकृत रूप में चित्रित करते हुए लिखा है-

"वृक्ष की है शाख।

क्यों निर्भीत-सी

बिल्कुल अकेली

पूर्णतः

निर्वस्त्र-सी

होकर खड़ी हो?"

आदेश जी ने प्रकृति का चित्रण करते हुए नारी की सुन्दरता को मलय पवन व गुलाब की पंखुड़ियों के सदृश माना है -

"मलय-पवन परिरंभित ज्यूं

झरती गुलाब-पंखुडियाँ

श्रुति-सुगन्ध से सुरभित मानो

चुनी गयी स्वर-मणियाँ।।"

आदेश जी ने कविता में स्वयं प्रश्न करके उसका उत्तर साथ देते हुए वनस्पति के विषय में लिखा है -

"वनस्पतियों की उपज है

वनस्पति ही तो कहाती

इस जगत में।"

कवि ने उपर्युक्त पंक्तियों में स्पष्ट किया है कि संसार में जो भी वनस्पति है उससे वनस्पति का ही जन्म होता है। उसी प्रकार मानव मन में विभिन्न भावों का जन्म होता रहता है कवि प्रकृति के माध्यम से मानवीय भावनाओं को जाग्रत करना चाहता है। कवि ने पुष्प का चित्रण करते हुए लिखा है कि जिस प्रकार पुष्प सभी के मन को अपनी ओर आकर्षित करता है। उसी प्रकार प्रकृति का सुरम्य वातावरण निरन्तर आनन्दानुभूति कराता रहता है। वह दुःखों से दूर रखता है -

"तुम पुष्प चयन करती हो,

वन-उपवन की

वल्लरियों और विटपों से

शूल की सीमाओं से निकालकर

सजाती हो,

पुष्प-पात्रों में।

जो मोहते हैं

हर दर्शक,

हर आगत का मन।।"

आदेश जी ने अपनी कृति 'शतदल'में जीवन के यथार्थ का चित्रण प्रकृति के सम्बन्ध से जोड़ते हुए लिखा है।

महाकवि ने प्राकृतिक मनभावन दृश्यों का चित्रण करते हुए पतझड़ के कारण पत्रविहीन वृक्ष तथा वनस्पतियों के विवर्ण होने का सहज और स्वाभाविक रूप प्रस्तुत किया है -

"पतझड़ आया झर चले पात।

हो चला क्षीण रवि का आतप।

हो चले विवर्ण पुहुप-पादप।

हो चले शिथिल-गति जल-प्रताप।।"

प्रो॰ आदेश ने उपर्युक्त पक्तियों में निरंतर परिवर्तन के कारण वानस्पतिक प्रभाव को परिलक्षित किया है। जिस प्रकार मानव-जीवन में सुख-दुःख आते रहते हैं, ठीक उसी प्रकार वनस्पतियों पर भी पतझर व बसन्त ऋतु का प्रभाव पड़ता है।

आदेश जी ने मानवीय अभिव्यक्ति के प्रकृति के सुरम्य वातावरण को प्रभावशाली बताया है। वे टयूलिप के फूल व प्लम के पेड़ का मनोहारी दृश्य उपस्थित करते हुए कहते हैं -

"नारंगी-सित-लाल पित, बैंगनी, ऋतु-अनुकूल।

मन की रह-रह मोहते, सखि। टयूलिप के फूल।।

देखो प्लम के पेड़ पर, फूल उगे हैं श्वेत।

किन्तु प्रकृति-षडयंत्र-वश, फल होंगे अश्वेत।।"

कवि ने मानव मन की अभिव्यक्ति को प्रकृति के माध्यम से और सरसता और सहज प्रदान की है -

"गेहूं-मक्का की बालों पर

झूलूंगा झूला डाल-डाल।

मेरे मद से मतवाली हो,

फसलें हो जाएंगी निहाल।।"

उपर्युक्त विवेचनोपरांत संक्षेप में कह सकते हैं कि आदेश जी की समस्त कृतियों में वनस्पतिक स्वरूप और प्रेम का प्रकृति के माध्यम से सहज और स्वाभाविक वर्णन कवि द्वारा किया गया है। कवि ने पेड़-पौधे, फल-फूल, लता आदि के माध्यम से मानव जीवन को आदर्श रूप प्रदान करने के लिए मनुष्य का आंतरिक भावनाओं को प्रेरित करने का प्रयास किया है। कवि का वानस्पतिक प्रेम उनकी समस्त कृतियों में सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। कवि कहीं पर मानवीय सौंदर्य के दर्शन कराता है तो कहीं उपदेशात्मक संदेश के माध्यम से वानस्पतिक चित्रण प्रस्तुत करता है।

संदर्भिका

प्रो॰ हरिशंकर 'आदेश'- निर्मल सप्तशती - निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2001

प्रो॰ हरिशंकर 'आदेश'- आदेश सप्तशती - निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2001

प्रो॰ हरिशंकर 'आदेश'- जीवन सप्तशती - विशाल प्रकाशन, दिल्ली, 2002

महाकवि हरिशंकर 'आदेश'- जमुना सप्तशती - लक्ष्मी प्रकाशन, दिल्ली, 2003

प्रो॰ हरिशंकर 'आदेश'- विवेक सप्तशती - चंद्रा प्रकाशन, मुदादाबाद, 2004

प्रवासी महाकवि 'आदेश'- पत्नी सप्तशती - चंद्रा प्रकाशन, मुदादाबाद, 2004

गजानन मुक्तिबोध

(डॉ. राजपाल शर्मा) - चांद का मुंह टेढ़ा है - एक विवेचन - अमीता प्रकाशन, चरर्वे बालान दिल्ली, 1984

गुलाब राय - काव्य और कला तथा अन्य निबंध

जयशंकर प्रसाद - कामायनी - भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, सं॰ 2010

गोस्वामी तुलसीदास - रामचरित मानस (बड़ा) - गीता प्रेस, गोरखपुर, सं॰ 2035

डॉ. देवराज - भारतीय संस्कृति (महाकाव्यों के आलोक में) - प्रकाशक, शशिकांत, सं॰ 1966

Corresponding Author

Updesh Devi*

Assistant Professor of Hindi, Guru College of Education, Mohindergarh

inderdongra@gmail.com